भारत - जांबिया संबंध

जांबिया के स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं जैसे कि डा. केनेथ कौंडा ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष, विशेष रूप से महात्मा गांधी जी से प्रेरणा प्राप्त की। जांबिया के नेताओं द्वारा और युवा पीढ़ी के नेताओं द्वारा भी गांधी जी की आज भी प्रशंसा की जाती है तथा वे उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं। मधुर संबंध इस शताब्दी में भी जारी हैं। पिछले कई दशकों में भारत को विश्वसनीय साझेदार एवं मित्र के रूप में देखा जा रहा है तथा जांबिया के नेताओं द्वारा भारत को "समय की कसौटी पर खरे और सुख-दुख के साथी" के रूप में बताया जाता है। यह संबंध आज भी परस्पर सम्मान पर आधारित है तथा परस्पर लाभ के लिए साझेदारी की भावना से संचालित है।

द्विपक्षीय यात्राएं :

उच्च स्तर पर यात्राएं हमारे ऐतिहासिक द्विपक्षीय संबंध की एक खासियत है। जांबिया के पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान डा. केनेथ कौंडा ने 10 से अधिक बार भारत का दौरा किया जिसकी शुरूआत 1967 से हुई। स्वर्गीय राष्ट्रपति मवानावासा ने अप्रैल, 2003 में भारत का राजकीय दौरा किया। प्रथम महिला श्रीमती क्रिस्टीन कसेबा के साथ राष्ट्रपति मिशेल चिलुफिया साटा ने मार्च, 2012 में भारत की निजी यात्रा की तथा पहले राष्ट्रपति डा. केनेथ कौंडा ने जून, 2012 में भारत की निजी यात्रा की। 2013 में उप राष्ट्रपति डा. गाय स्कॉट के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय आधिकारिक एवं कारोबारी शिष्टमंडल, जिसमें व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योग, जेंडर एवं बाल विकास मंत्री तथा खनन उप मंत्री शामिल थे, ने मार्च 2013 में नई दिल्ली में 9वीं सी आई आई - एग्जिम बैंक गोष्ठी में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया जिसमें जांबिया फोकस कंट्री था।

24 अप्रैल 2015 को नई दिल्ली में आयोजित भारत - अफ्रीका स्वास्थ्य मंच में उप स्वास्थ्य मंत्री डा. चितालू चिलुफा ने जांबिया का प्रतिनिधित्व किया। वाणिज्य, व्यापार एवं उद्योग मंत्री सुश्री मार्गरेट एम मवानाकाटवे ने आई ए एफ एस-3 के दौरान अतिरिक्त समय में 24 अक्टूबर 2015 को नई दिल्ली में आयोजित चौथी भारत - अफ्रीका व्यवसाय मंच शिखर बैठक में भाग लिया। कृषि मंत्री तथा उप स्वास्थ्य मंत्री एवं उप विदेश मंत्री के साथ उप राष्ट्रपति श्रीमती इनोन्ज एम विना ने 26 से 29 अक्टूबर 2015 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक में जांबिया का प्रतिनिधित्व किया।

भारत की ओर से प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1964 में (सूचना एवं प्रसारण मंत्री के रूप में), 1970 और 1976 में जांबिया का दौरा किया तथा राष्ट्रपति वी वी गिरी और राष्ट्रपति संजीवा रेड्डी ने क्रमश: 1974 एवं 1981 में जांबिया का दौरा किया। प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1986 में तथा राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन ने 1989 में जांबिया की यात्रा की थी। हाल की यात्राओं में, जनवरी, 2010 में माननीय उप राष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने जांबिया का आधिकारिक दौरा किया।

अगस्त, 2014 में, सचिव (पश्चिम) ने लुसाका का दौरा किया तथा उप विदेश मंत्री गैबरिय नमुलाम्बे एवं स्वास्थ्य मंत्री जोसफ कसोंडे के साथ बातचीत की। जुलाई 2015 में भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम राज्य मंत्री श्री जी एम सिदेश्वर ने अक्टूबर 2015 में नई दिल्ली में आयोजित होने वाली तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के लिए जांबिया के राष्ट्रपति को आमंत्रित करने के लिए प्रधानमंत्री के विशेष दूत के रूप में जांबिया का दौरा किया। खान एवं इस्पात मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने फरवरी 2015 में केपटाउन, दक्षिण अफ्रीका में माइनिंग इंडाबा के दौरान अतिरिक्त समय में जांबिया के वाणिज्य, व्यापार एवं उद्योग मंत्री तथा कार्यकारी खान मंत्री सुश्री मार्गेरेट मवानाकाटवे से मुलाकात की।

आर्थिक सहयोग

भारत जांबिया को आर्थिक सहायता प्रदान करता है तथा व्यापक श्रेणी के कौशल विकास पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने में सहायता करता है। जांबिया भारी संख्या में आई टी ई सी छात्रवृत्तियों का लाभ उठाता है तथा आज तक की तिथि के अनुसार आई टी ई सी के तहत विभिन्न विषय क्षेत्रों में भारत में जांबिया के लगभग 2400 नागरिकों को प्रशिक्षण दिया गया है।

जनवरी 2014 में भारत सरकार ने 650 प्री फैब्रिकेटेड हेल्थ पोस्ट स्थापित करने के लिए जांबिया के प्रस्ताव के लिए 50 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता को अनुमोदित किया था। परियोजना का कार्यान्वयन अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है। जांबिया से अतिरिक्त ऋण सहायता एवं अनुदान के लिए अनुरोध विचाराधीन हैं।

द्विपक्षीय व्यापार :

द्विपक्षीय व्यापार में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारतीय मिशन भारतीय कारोबारियों को जांबिया के बाजार में घुसपैठ करने के लिए निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है क्योंकि जांबिया में दीर्घावधिक आर्थिक संकेतक तथा संभावनाएं उल्लेखनीय हैं।

2014-15 को समाप्त वर्ष में भारत की ओर से जांबिया को निर्यात का मूल्य 367 मिलियन अमरीकी डालर तथा आयात का मूल्य 283 मिलियन अमरीकी डालर था; उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 2015-16 (अप्रैल से नवंबर) के लिए व्यापार के आंकड़े इस प्रकार हैं : भारत का आयात : 274.78 मिलियन अमरीकी डालर और आयात : 232.49 मिलियन अमरीकी डालर भारत द्वारा जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से औषधियां एवं भेषज पदार्थ, मशीनरी एवं इंस्ट्रूमेंटस, परिवहन उपकरण, कॉटन यार्न एवं फेब्रिक, प्लास्टिक, रबर, रसायन तथा इलेक्ट्रानिक गुड्स शामिल हैं। भारत जांबिया से जिन वस्तुओं का आयात करता है उनमें मुख्य रूप से अलौह धातुएं, अयस्क (कॉपर एवं कोबाल्ट), अर्ध बहुमूल्य पत्थर एवं कच्ची कपास शामिल हैं।

कुछ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय पहलें एवं व्यापार संबद्ध मुद्दे यहां नीचे दिए गए हैं :

(i) अखिल अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना : जांबिया के लिए अखिल अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना का सफलतापूर्वक उद्घाटन वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से अगस्त 2010 में काबवेन में मुलुंगुशी विश्वविद्यालय में किया गया। विश्वविद्यालय शिक्षण अस्पताल, लुसाका में टीसीआईएल - पेशंट इंड लोकेशन (पी ई एल) सेंटर द्वारा भी एक ई-नेटवर्किंग परियोजना पूरी की गई तथा नवंबर, 2009 में इसे चालू किया गया। परियोजना की बढ़ाई गई अवधि 2016 में समाप्त हो रही है। परियोजना संतोषप्रद ढंग से काम कर रही है।

(ii) जांबिया में भारत के निवेश : जांबिया में भारत निवेश करने वाले सबसे बड़े देशों में से एक है। भारत के निवेशों में भारत - जांबिया बैंक शामिल है जिसकी स्थापना 1984 में जांबिया सरकार तथा भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के तीन बैंकों अर्थात, बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के बीच एक संयुक्त उद्यम के रूप में हुई। तीन भारतीय पी एस यू के पास 60 प्रतिशत शेयर हैं तथा शेष 40 प्रतिशत शेयर जांबिया सरकार के पास हैं। भारत - जांबिया बैंक बैंकों का सबसे बड़ा नेटवर्क चलाता है तथा जांबिया के बैंकिंग क्षेत्र की आधारशिला है। यह जांबिया में बैंकिंग का पर्याय बन गया है। यह जांबिया के साथ भारत के संबंधों का एक मील पत्थर है तथा परस्पर लाभप्रद, ठोस संयुक्त उद्यम साझेदारी का एक उदाहरण है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है।

वेदांता के कोंकोला कॉपर माइंस (के सी एम) ने जांबिया में 2.8 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक निवेश किया है तथा उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में यह निवेश बढ़कर 3 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच जाएगा।

मैसर्स आर जे कारपोरेशन नामक एक भारतीय फर्म ने 30 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया है तथा यह जांबिया में पेप्सी कंपनी का अधिकृत बाटलर है। नव भारत वेंचर्स लिमिटेड, हैदराबाद की सहायक कंपनी मैसर्स नव भारत सिंगापुर लिमिटेड ने मांबा कोलियरीज लिमिटेड में 65 प्रतिशत इक्विटी शेयर खरीदे हैं (जांबिया सरकार के पास जांबिया कंसोलिडेटेड कॉपर माइंस इंवेस्टमेंट होल्डिंग या जेड सी सी एम - आई एच के माध्यम से शेष 35 प्रतिशत शेयर हैं)। नव भारत वेंचर्स लिमिटेड मांबा कोलियरीज के पुन: पूंजीकरण तथा एक नया कोल हैंडलिंग तथा वाशिंग प्लांट संस्थापित करने में 108 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश करेगा। नव भारत मांबा कोलियरीज के लो ग्रेड कोयले का उपयोग करके न्यूनतम 300 मेगावाट की उत्पादन क्षमता के एक कोल फायर्ड विद्युत प्लांट को भी विकसित करेगा।

टौरिएन मैग्नीज लिमिटेड जो धरनी संपदा प्राइवेट लिमिटेड का हिस्सा है, ने मैग्नीज के खनन में 2010 में लगभग 20 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया तथा मध्य प्रांत के सेरेंजी जिले में एक मैग्नीज प्रसंस्करण प्लांट का निर्माण करने में 200 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश

करने की योजना बना रहा है। यह अफ्रीका में मैग्नीज के सबसे बड़े प्रोसेसिंग प्लांट में से एक होगा।

मैसर्स एन आर बी फार्मा लिमिटेड ने जून, 2013 में लुसाका साउथ मल्टी फेसिलिटी इकोनामिक जोन (एम एफ ई जेड) में 10 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से एक फार्मास्यूटिकल प्लांट के निर्माण का कार्य शुरू किया। भारती एयरटेल ने नवंबर, 2010 में एयरटेल जांबिया नाम से अपने नए ब्रांड की शुरूआत की तथा आज यह जांबिया में अग्रणी मोबाइल सेवा प्रदाता है। । टाटा द्वारा निवेशों में एक फाइव स्टार होटल दि ताज पमोदजी, जिसका प्रबंधन ताज होटल ग्रुप द्वारा किया जाता है; जांबिया विद्युत आपूर्ति कंपनी (जेस्को) और टाटा अफ्रीका होल्डिंग के बीच एक संयुक्त उद्यम शामिल है जिसे "इटेझी टेझी पावर कारपोरेशन लिमिटेड" (आई टी पी सी) कहा जाता है। आई टी पी सी के लिए भारत सरकार ने जांबिया सरकार को 50 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता प्रदान की थी जिसमें से केवल 29 मिलियन अमरीकी डालर का उपयोग किया गया तथा सितंबर 2015 में भारत सरकार द्वारा अप्रयुक्त राशि को निरस्त कर दिया गया। उम्मीद है कि परियोजना 2016 की पहली तिमाही में चालू हो जाएगी। इसके अलावा, जांबिया के आर्थिक एवं व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों में मझोले आकार की बीसियों भारतीय कंपनियों ने अच्छा-खासा निवेश किया है

आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंधों में वृद्धि, जांबिया में भारतीय निवेश की मात्रा में निरंतर वृद्धि को देखते हुए दोनों देशों ने अनेक मुद्दों पर बातचीत करना जारी रखा है तथा वे ऐसे तरीकों एवं तंत्रों पर चर्चा कर रहे हैं जिससे द्विपक्षीय संबंध और सुदृढ़ हो सकें। जांबिया के खनन, स्वास्थ्य, कृषि और अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में कारोबारी अवसरों का पता लगाने के इच्छुक अनेक कारोबारियों ने जांबिया का दौरा किया है। 2015 की उल्लेखनीय घटनाएं इस प्रकार हैं : माइलोन लैबोरेटरीज लिमिटेड ऑफ इंडिया ने लुसाका साउथ मल्टी फेसिलिटी आर्थिक क्षेत्र में 4 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से एक अधुनातन ओरल सॉलिड डोज फार्मास्युटिकल सुविधा के निर्माण के लिए जांबिया के प्राधिकारियों के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया है; जुलाई 2015 में बी एल के सुपर स्पेसियलिटी हास्पिटल, नई दिल्ली और जांबिया के विश्वविद्यालय शिक्षण अस्पताल के बीच सहयोग करार;

इलेक्रामा 2016 के 12वें संस्करण को प्रोत्साहित करने के लिए 29 सितंबर को लुसाका में इंडियन इलेक्ट्रिकल एण्ड इलेक्ट्रानिक्स मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा रोड शो; 2 अक्टूबर को लुसाका में अपने 6 फसल संरक्षण उत्पादों का अनावरण करने के लिए मैसर्स नागार्जुन एग्रीकेम लिमिटेड, हैदराबाद द्वारा उत्पाद अवतरण कार्यक्रम; अक्टूबर 2015 में अपोलो ग्रुप ऑफ हास्पिटल तथा जांबिया के स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच एम ओ यू; नवंबर 2015 में लुसाका में मारूती सुजुकी का एरटिगा वाहन लांच करने के लिए मैसर्स गार्जियन मोटर्स लिमिटेड, जांबिया द्वारा कार्यक्रम; और दिसंबर 2015 में जांबिया में बजाज बाक्सर एम बी 150 मोटर बाइक लांच करने के लिए बजाज आटो लिमिटेड द्वारा कार्यक्रम।

भारतीय समुदाय / पी आई ओ :

जांबिया में एक बड़ा एवं जीवंत भारतीय समुदाय है जिनमें से कई दशकों पहले जांबिया में बस गए हैं। जांबिया में लगभग 13,000 भारतीय / पी आई ओ हैं तथा कुछ ने जांबिया की राष्ट्रीयता और / या ब्रिटेन की राष्ट्रीयता ग्रहण कर ली है। जांबिया की अर्थव्यवस्था में, विशेष रूप से व्यापार, उद्योग, अतिथि सत्कार तथा परिवहन जैसे क्षेत्रों में भारतीय मूल के जांबियन उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं। भारतीय समुदाय की भागीदारी बहुमूल्य एवं अर्ध बहुमूल्य पत्थरों के खनन, कृषि, बागवानी एवं रसायन जैसे क्षेत्रों में भी बढ़ रही है। भारतीय सरकारी पदों पर भी तैनात हो रहे हैं तथा राष्ट्रपति चिलुबा के कार्यकाल के दौरान भारतीय मूल के दो व्यक्तियों को कैबिनेट मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। हाल के वर्षों में, भारत की आर्थिक एवं वाणिज्यिक भागीदारी में नए उत्थान से विशेष रूप से भारतीयों के स्वामित्व वाले उद्यमों में भारतीय पेशेवरों की संख्या बढ़ी है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय उच्चायोग, लुसाका की वेबसाइट :
www.hcizambia.gov.in

*****

जनवरी, 2016